ASTRO ARPITA NATH

सायन बनाम निरयण राशि चक्र

Arpita Nath द्वारा · सामान्य ज्योतिष विषय · 2026-06-13

यदि आपने वर्षों तक अपनी पाश्चात्य कुंडली पढ़ने के बाद कभी वैदिक ज्योतिष में अपनी जन्म कुंडली देखी है, तो संभवतः आपको एक गहरा कॉस्मिक झटका लगा होगा: आपकी राशियाँ लगभग एक पूरी राशि पीछे खिसक गईं।

यदि आप पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार खुद को अग्नितत्व वाला सिंह (Leo) सूर्य मानते थे, तो वैदिक ज्योतिष आपको एक संवेदनशील कर्क (Cancer) राशि के रूप में वर्गीकृत कर सकता है। यह अचानक बदलाव क्यों?

यह गणना के एक मूलभूत अंतर पर निर्भर करता है: **ट्रॉपिकल ज़ोडिएक (सायन राशि चक्र) बनाम साइडरियल ज़ोडिएक (निरयण राशि चक्र)**।

1. ट्रॉपिकल ज़ोडिएक (पाश्चात्य ज्योतिष): ऋतुओं पर आधारित

पाश्चात्य ज्योतिष ट्रॉपिकल राशिचक्र का उपयोग करता है। यह प्रणाली अपने शुरुआती बिंदु—0° मेष (Aries)—को वसंत विषुव (उत्तरी गोलार्द्ध में वसंत ऋतु का पहला दिन, लगभग 21 मार्च) से जोड़ती है।

- **यह कैसे काम करता है**: यह पृथ्वी की ऋतुओं के सापेक्ष सूर्य की स्थिति को मापता है।
- **इसका दर्शन**: यह राशिचक्र को पृथ्वी के वार्षिक सौर चक्र से जुड़े एक मनोवैज्ञानिक मानचित्र के रूप में देखता है।
- **पेंच क्या है**: यह मानता है कि वसंत विषुव हमेशा मेष राशि के भौतिक नक्षत्र के साथ संरेखित रहता है - जो 2,000 साल पहले सच था, लेकिन अब सच नहीं है।

2. साइडरियल ज़ोडिएक (वैदिक ज्योतिष): स्थिर तारों पर आधारित

वैदिक ज्योतिष (ज्योतिष) साइडरियल राशि चक्र (निरयण प्रणाली) का उपयोग करता है। पृथ्वी की बदलती ऋतुओं का उपयोग करने के बजाय, यह राशिचक्र को रात के आकाश में तारों की वास्तविक भौतिक स्थितियों से जोड़ता है।

- **यह कैसे काम करता है**: यह मापता है कि वर्तमान में स्थिर नक्षत्र समूहों के सापेक्ष ग्रह वास्तव में कहाँ स्थित हैं।
- **इसका दर्शन**: यह कर्म और ब्रह्मांडीय समय को समझने के लिए वस्तुनिष्ठ खगोलीय वास्तविकता को ट्रैक करता है।
- **24-डिग्री का अंतर**: विषुवों का पुरस्सरण (Precession of the Equinoxes)

दोनों प्रणालियाँ एक समान क्यों नहीं हैं?

इसका उत्तर 'विषुवों का पुरस्सरण' (precession of the equinoxes) नामक एक खगोलीय घटना है। पृथ्वी एक बिल्कुल सीधे लट्टू की तरह नहीं घूमती है। समय के साथ यह अपनी धुरी पर धीरे-धीरे डगमगाती है। इस सूक्ष्म डगमगाहट के कारण, पृथ्वी की ऋतुओं के सापेक्ष तारों की स्थिति प्रत्येक 72 वर्षों में लगभग 1 डिग्री खिसक जाती है।

पिछली दो सहस्राब्दियों में, इस डगमगाहट ने लगभग 23 से 24 डिग्री का अंतर पैदा कर दिया है (जिसे **अयनांश (Ayanamsha)** कहा जाता है)।

चूँकि प्रत्येक राशि 30 डिग्री की होती है, इसलिए 24 डिग्री घटाने से अधिकांश ग्रहों की स्थिति पिछली राशि में खिसक जाती है!

यदि आप मौसमी प्रतीकात्मकता के माध्यम से अपने मनोवैज्ञानिक स्वरूप को समझना चाहते हैं, तो आपकी पाश्चात्य कुंडली उस भाषा को बोलती है। लेकिन यदि आप यह ट्रैक करना चाहते हैं कि जब आपने अपनी पहली सांस ली थी, तब ग्रह भौतिक रूप से कहाँ स्थित थे, तो आपकी वैदिक कुंडली उस वास्तविक मानचित्र को दर्शाती है।

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।